अध्याय – 5

सारांश ,निष्कर्ष एवं सुझाव

5.1 प्रस्तावना

सारांश किसी भी अध्ययन को संक्षिप्त करने का प्रयास होता है जिसके द्वारा अध्ययन को संक्षिप्त व सरल रूप में समझा जाता है। इस अध्ययन में लघु शोध का सारांश एवं अध्ययन 4 में दिये गये प्रदत्तों के विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्ष को प्रस्तुत किया गया है। साथ ही संबंधित अध्ययन को विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करने के लिए सुझाव भी देने का प्रयास किया गया है।

अध्ययन के क्षेत्र में विद्यालय के बच्चों की आधारभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की स्थिति का आंकलन किया गया है। जिससे बच्चों की आधारभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के बारे में जानकारी प्राप्त हुई है। जिसके लिए उपकरण अक्षर कैलेण्डर एवं नंबर कैलेण्डर का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में बच्चों की सभी प्रकार की स्थिति का पता लगाया गया है। जिसमें प्राथमिक शासकीय विद्यालय शामिल है। सभी बच्चों की आधारभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की स्थिति को समझने और जानने के लिए सबसे अधिक सहायक, शाला प्रभारी शिक्षक एवं प्राचार्य उत्तरदाता प्राथमिक शासकीय विद्यालय के शिक्षक हैं।

अध्ययन के नतीजों का यह मतलब है, कि प्रत्येक प्राथमिक शासकीय विद्यालय के बच्चों की आधारभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की स्थिति का अनूठा अध्ययन है।

5.2 समस्या का कथन

प्राथमिक शासकीय विद्यालय के बच्चों की आधारभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का अध्ययन भोपाल जिले में।

5.3 शोध का उददेश

- प्राथमिक स्तर के बच्चों की आधारभूत साक्षरता की स्थिति का अध्ययन करना।
- प्राथमिक स्तर के बच्चों की संख्यात्मक ज्ञान की स्थिति का अध्ययन करना।

5.4 शोध की परिसीमाएँ

यह अध्ययन भोपाल जिले के शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में किया गया। जिसमें हमने भोपाल जिले के प्राथमिक शासकीय विद्यालय के अर्न्तगत आधारभूत साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का अध्ययन किया जिसमें हमने प्राथमिक स्तर के कक्षा–1 एवं कक्षा–2 के विद्यार्थियों पर उपकरणों का प्रयोग किया।

5.5 जनसंख्या

भोपाल जिले के प्राथमिक शासकीय विद्यालय में अध्ययन कर रहे छात्र इस अध्ययन की जनसंख्या हैं।

5.6 न्यादर्श का चयन

न्यादर्श से तात्पर्य पूरे समूहों में चुनी गई कुछ इकाइयों का समूह है। न्यादर्श के चयन करने हेतु अन्वेषक द्वारा भोपल जिले में संचालित प्राथमिक स्तर के शासकीय विद्यालयों की सूची बनाई गई। जिसमें 4 शासकीय प्राथमिक विद्यालय का चयन किया गया। चयनित विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं का चयन किया गया है।

5.7 उपकरण

अन्वेषक ने प्रशिक्षण भाषा की विशेषताओं को ध्यान में रखकर अपने शोध हेतु उपयुक्त प्रविधियों या उपकरणों का चुनाव किया है।

जिससे अन्वेषक द्वारा लिये गये परिणाम में उपयोगी हो सकेगा, प्रस्तुत छात्रों के आँकड़ों के संग्रहण हेतु उपकरण।

5.7.1 आधारभूत साक्षरता के लिए उपयोग किये गये उपकरण

- **बोलना** – अन्वेषक के द्वारा अक्षर कैलेण्डर का उपयोग किया गया जो बच्चों की बोलने की समझ को दर्शाता है। जो आँकड़ों के संग्रहण के लिए उपयोगी रहा।
- **पढ़ना** – बिना मात्रा वाले शब्द एवं मात्रा वाले शब्द जो अन्वेषक के द्वारा अलग–अलग कक्षाओं में पठन के लिए स्वंय निर्मित किया गया।
- **लिखना** – अन्वेषक के द्वारा लेखन के लिए स्वंय निर्मित किये गये उपकरणों का उपयोग किया गया।

5.7.2 संख्या ज्ञान के लिए उपयोग किये गये उपकरण

- **बोलना** – अन्वेषक के द्वारा अंक कैलेण्डर का उपयोग किया गया जो बच्चों की बोलने की समझ को दर्शाता है। जो आँकड़ों के संग्रहण के लिए उपयोगी रहा।
- **पढ़ना** – अंक कैलेण्डर एवं पहाड़े का कैलेण्डर बच्चों को पढ़वाने के लिए उपयोग किया गया कि बच्चे समझ के साथ पढ़ रहे हैं या नहीं।
- **लिखना** – लेखन के लिए अन्वेषक के द्वारा स्वंय निर्मित किये गये उपकरणों का उपयोग किया गया।

5.8 निष्कर्ष

इस अध्ययन के द्वारा छात्रों की वर्तमान स्थिति का पता चला, कि सीखने के प्रतिफल के आधार कितने बच्चे समझ के साथ सीख रहे हैं, और कितने रटकर सीख रहे हैं। सीखने के प्रतिफल के आधार पर वर्तमान में शासकीय प्राथमिक विद्यालयों के बच्चों की स्थिति अच्छी नहीं है। जिसमें शिक्षक के द्वारा पुरानी पद्वतियों के माध्यम का ही उपयोग कर पढाया जाता है, जिससे बच्चे पढ़ने में रूचि नहीं लेते और इस कारण उनकी समझ अच्छी नहीं है। बच्चों को संख्या का ज्ञान तो है, किन्तु उन्हें जोड़–घटाना नहीं आता है। विद्यालय में पढ़ रहें छात्रों में कुछ बच्चे ही सीखने के प्रतिफल के आधार पर सीखते हैं।

5.9 सुझाव

- शासकीय प्राथमिक विद्यालय में सभी कक्षाओं के लिए अलग–अलग कमरे होने चाहिये।
- शासकीय प्राथमिक विद्यालय में सभी कक्षाओं के लिए एक–एक शिक्षक होना चाहिये।
- विद्यालय का वातावरण रूचिपूर्ण होना चाहिये।
- शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में कक्षाओं के लिए चटाई की जगह मेज एवं कुर्सी का प्रबंध होना चाहिये।
- शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में स्वच्छ पीने के पानी की पर्याप्त व उपयुक्त व्यवस्था होनी चाहिये।

- शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में बालक एवं बालिका के लिए अलग–अलग शौचालय की व्यवस्था के साथ पानी की व्यवस्था होनी चाहिए।
- शासकीय प्राथमिक विद्यालयों में कम से कम एक चपरासी की व्यवस्था होनी चाहिये।

5.10 भावी शोध के सुझाव

- प्राथमिक स्तर के शिक्षकों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
- विद्यालय स्तर पर प्रस्तुत समस्या को रखकर विस्तृत रुप से शोध कार्य किया जा सकता है।
- राज्य स्तर और केन्द्र स्तर पर भी तुलनात्मक शोध कार्य किया जा सकता है।
- हिन्दी और अंग्रेजी भाषा पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
- माध्यमिक एवं हाई स्कूल स्तर के छात्रों पर भी शोध कार्य किया जा सकता है।
- राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राज्यों के मध्य भी प्रस्तुत समस्या पर शोध अध्ययन किया जा सकता है।